उत्तर वैदिक साहित्यों के आर्थिक विचार

डॉ० शैलेश कुमार
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय
सिवान (जयप्रकाश विश्वविद्यालय)
छपरा।

वैदिक काल आर्य के विकासशील आर्थिक जीवन का प्रथम चरण था। किन्तु उत्तर वैदिक काल में लोगों के आर्थिक जीवन में काफी परिवर्तन आ गया। और सामाजिक जीवन में परिवर्तन के साथ आर्थिक विचारों में भी प्राढता आती गई। वैदिक काल की जातीयों के विभाजन में परिवर्तन तथा वर्ण विभाजन के साथ–साथ व्यवसायों में भी काफी वृद्ध और उनका विकास हो गया था। पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं की भी आर्थिक स्थिति में पहले की अपेक्षा काफी सुधार था। वे कुटीर उद्योंगों तथा इसी प्रकार की अन्य अर्थकारी कलाओं में भाग लेने लगी थी।

आर्थिक विचारों के स्रोत

पूर्व वैदिक काल काल की सामाजिक व्यवस्था ग्रामय सभ्यता के अन्तर्गत आती हे परन्तु उत्तर वैदिक काल में सभ्यता नागर सभ्यता के रूप में बदल गई। इस काल के आर्थिक विचारों का पता हमें संहिताओं साम, यजु, अथर्व ब्राहमण ग्रन्थों तथा अरण्यकों से चलता हैं इन ग्रंथों में आर्थिक जीवन की क्रियाओं एवं समस्याओं का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन किया गया है।

आर्थिक जीवन

आर्थिक दृष्टिकोण से भी इस युग में काफी परिवर्तन हों चुके थे कृषि के विकास के नये–नये विचारों को जन्म दिया गया और अधिकतम उत्पादन के लोग प्रयत्नशील रहे। पूर्व वैदिक काल में जुताई के लिये 5–6 बैलों का उल्लेख प्राप्त होता है। किन्तु इस युग में प्राप्त में 24 बैलों के द्वारा भी हल खींचे जाते थे। इसका उल्लेख हमें काठक संहिता में प्रयोग था अथर्ववेद तथा शतपथ ब्राहमण में खाद के प्रयोग का उल्लेख मिलता है।

कृषि

इस युग में कृषि की विद्यायों से ही देखी जाती थी। किन्तु भूमि को उपजाऊ बनाकर विभिन्न प्रकार के बाधान्नों क उत्पन्न करने का ज्ञान काफी अधिक बढ़ चुका था लोग खेती में नये–नये तरीके अपनाने लगे थे अथर्ववेद में खेती करने वाले हल के निर्माण फसल की कटाई करने खाद्यान्न को संचित रखने आदि की विद्याओं का उल्लेख मिलता है। इस युग में वे लोग बहुत से अनाजो का उत्पादन करने लगे थे जिनके बारे में वे ऋग्वेद काल तक अनभिज्ञ थे जैसे पहले का कोइ ज्ञान नहीं था किन्तु उत्तर वैदिक काल में इसका भी उल्लेख मिलता है। फसल किस समय बोई जानी चाहिए कैसी जमीन हो आदि के विचारों में भी अनुभव के कारण गंभीरता आ गई थी।

उद्योंग धंधो का विकास

उद्योग धंधों का बहुमुखी विकास होने लगा था पुरूष वर्ग ही नही स्त्रियों को भी कुटीर उद्योग धंधों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। सुईकारी का काम करने वाली या कमीदर काढने बांस का काम करने वाली बेंत की टोकरी आदि बनाने वाली स्त्रियों का उल्लेख मिलता है इससे यह स्पष्ट होता है कि इस युग में लोग श्रम को अधिक महत्व देने लगे थे और हर वर्ग सामाजिक विकास की दिशा में प्रयत्नशील था। उद्योगों धंधो के साथ–साथ धातुओं का प्रचलन ऋग्वेद युग में नही था किन्तु यजुर्वेद में हमें उसका संकेत मिलता है। लौह को यजुर्वेद में श्याम के नाम से पुकारा जाता था ताँबा, सोना आदि धातुओं से आभूषण तैयार करने आदि की प्रक्रियाओं भी उल्लेख मिलता है ऋग्वेद में किन्तु इस युग में सोन स्वर्ण आदि नदियाँ से रत्नयर्मा पृथ्वी के अन्दर से निकालकर और उसे गलाकर किया जाता था। शतपथ ब्राहमण में यह भी उल्लेख मिलता है कि सोना जल धाकर निकाला जाता था।

व्यापार एवं व्यवसाय

उस समय भी व्यापारिक संध थे उन्हें श्रेष्ठ संध के नाम से पुकारा जाता था अथर्ववेद के मंत्रों से स्पष्ट हो जाता है इस काल में आभूषण अन्य आद्योगिक वस्तुओं के क्रय–विक्रय में सौदेवाली काफी बढ़ गई थी।

व्यापारी का अपनी लागत को देखते हुए ही वस्तु का मूल्य निर्धारित करते थे व्यापार पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ चुका था और समुंद्र भाग से दूसरे स्थान को दापों में बेचने के लिये वस्तुयें ले जाती थी। समुद्र व्यापारिक मार्ग के रूप मे काफी प्रतिष्ठित हो चुका था।

विनियम

तत्कालीन समाज में यद्यपि पशुधन आय का पहला श्रोत माना गया है, किन्तु सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातुओं कें उद्योग से पर्याप्त मात्रा में आय प्राप्त होती थी। इस युग में प्राप्त विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्के से पता चलता है कि लोग इनका प्रयोग व्यवसाय तथा लेन देन में करने लगे थे। अतएव यह कहा जा सकता है कि वस्तु विनियम का स्थान धीरे–धीरे गुद्रा ने लेना प्रारंभ कर दिया था। शतपथ ब्राहमण काठक संहिता आदि में सिक्के का अनेकशः उल्लेख मिलता है ये विचार इस तथ्य के द्योतक है कि व्यापारिक विचार में काफी परिपक्वता आ चुकी थी और समाज आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था।

धन का वितरण

कृषि तथा विभिन्न उद्योगों से किए गये उत्पादन के वितरण का माध्यम व्यापार तथा व्यवसाय था। व्यापार तथा व्यवसाय में कोई विशेष अंतर नही था, केवल मात्रा में अंतर होता था। यातायात विनियम तथा महाजनी के साधनों के कारण समय वाणिज्य का उत्कर्ष अधिक था उपर्युक्त दोनों कार्यो के लिये बाजारों तथा उन तक पहुँचाने के लिये यातायात की समुचित व्यवस्था की गई थी। अथर्ववेद संहिता के अनेक मंत्रों से पता चलता है कि उस समय का व्यापार काफी बढ़ा चढ़ा था फिर भी समाज में धन का संचय कर अपना अस्तित्व बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील थे जबकि गरीब लोग सामान्य सामाजिक स्तर से काफी नीचे गिर चुके थे। सामाजिक असामानता पहले की अपेक्षा तेजी के साथ गहन और तीव्र होती जा रही थी।

व्याज तथा ऋण

व्यापार करने वाले श्रेष्ठ संघों के मालिक समझे जाते थे। व्याज एवं ऋण के लेन देन प्रचलित कर दी थी अथर्ववेद में उल्लिखित व्याज तथा उधार लेने वाले के एक विवरण से पता चलता कि इस समय ऋण लेने की प्रथा मौजुद थी, किन्तु कितने प्रतिशत ब्याज लिया जाता था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता क्रय–विक्रय में कृष्णल तथा–सिष्क का प्रयोग किया जाता था अथर्वेवेद अतिरिक्त तैत्तिरीय संहिता में भी ऋण लेने के प्रचलन का वर्णन विस्तुत ढ़ंग से किया गया है।

आय

ऋग्वेद के 10 मंडल में राजा को लोगों से कर लेने वाला कहा गया है किन्तु अथर्ववेद में उसे करारोपण का भी अधिकार दिया गया है इसके अतिरिक्त भूस्वा मित्व सम्बंधी अनेक ऐसे विचार मिलते है जिनकी कल्पना ऋग्वेदिक युग में नही की गई थी इस युग में राजा द्वारा विभिन्न अधिकारियों को नियुक्ति कर वसूलने के लिये की जा चुकी थी। कृषक व्यवसायी तथा समाज के प्रायः उद्यमी वर्ग से राष्ट्रीय आय का अंश समय–समय पर वसूल किया जाता था।

महाजनी

इस युग में धन का संचय श्रेष्ठि वर्ग के हाथों मे था और उन्ही के द्वारा विनियम अथवा परस्पर आदान–प्रदान किया जाता था। किन्तु महाजनी का कोई अलग संगठन रहा इसका कोई विवरण नही मिलता। तैत्तिरीय ब्राहमण में धन में आदान–प्रदान का अत्यधिक महत्व बताता गया है दूसरे की सम्पत्ति को लोक धरोहर के रूप में धारण किया करते थे। इस धरोहर रखने की प्रथा से स्पष्ट होता है कि बैंकिंग प्रणाली की रूपरेखा का सूत्र पात्र यही से प्रारंभ हो गया था।

कर

पूर्व वैदिक युग की तुलना में उत्तर वैदिक काल के करों की संख्या मे वृद्धि हो गई थी जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ करारोपण रीति में भी परिवर्तन होता गया और शासक द्वारा कर लगाने की आवश्यकता बढ़ती गई। लोगों ने परिश्रम करके उत्पादन में भी काफी वृद्धि की जिससे वे कर का भुगतान करने के लिये सद्वाम हो सके। सतथ ब्राहमण में राजा के द्वारा कई बार लोगों को कर भुगतान करने की बात कही गयी है।

यातायात के साधन

आर्थिक प्रगति तथा व्यापार के लिये आवश्यक था कि यातायात के समुचित साधन हो। इसी कारण रंथो का और उनके चलने के लिए राजमार्गो को निर्माण किया जाता था। अथर्व वेद में विपथा शब्द का प्रयोग किया गया, जिससे स्पष्ट उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर वैदिक युग आर्थिक विचारों की दृष्टि से एक समृद्ध युग था। इस युग के बाद ही सामाजिक जीवन में काफी विस्तार हो गया और राज्य राजा और राष्ट्र के आधार पर आर्थिक क्रियाओं का सम्पादन होने लगा। इसके साथ ही आर्थिक विचारों के विशेषज्ञ के रूप में अर्थशास्त्रियों का भी प्रादुर्भाव हो गया।

संदर्भ सूची

1. वही, 2,1,4,12
2. अथर्ववेद – 11–3–5–6
3. वही, 7,1,12,। वही, 89,3,: वही, 5,19,15
4. अथर्ववेद का 5–अ–4, सुक्त, 17,13
5. वही, का 3 अ–3–सू–14,3
6. शतपथ ब्रा– 2,1,1,7
7. शतपथ ब्रा– 1.1.1.10
8. वही, 1.4.1.15
9. यजुर्वेद 18/13
10. अथर्ववेद 12–अ. 1,1,26
11. अथर्ववेद 3.3.15.2.2
12. अथर्ववेद का 3 अ.सू 15.4
13. यजुर्वेद अ.30,7
14. अथर्ववेद 5,6,28,,1
15. श.ब्रा. – 5,6,28,,1
16. अथर्ववेद–का.5.अ.5सूक्त 11,7
17. वही, का. 22अ.9 सूक्त 22.2
18. वही, का.22अ.9 सूक्त 127,3
19. वही, का. 4आ.5 सूक्त22.2
20. तैत्तिरीय ब्राहमण प्रपा. 3.अनु 1